अध्याय 39

पोतीपर के घर में यूसुफ़

यूसुफ़ ने अपने पिता का चहेता होने का दर्जा अपनी किसी योग्यता के कारण प्राप्त नहीं किया, वरन केवल इसलिए क्योंकि वह याकूब की सबसे-चहेती पत्नी, राहेल, का पुत्र था और कई वर्ष सन्तान की लालसा करने के पश्चात पैदा हुआ था। लेकिन यूसुफ़ जहाँ भी गया, उसे बहुत पसन्द किया गया। अपने दासत्व की सेवकाई में, उसे अपने स्वामी पोतीपर की कृपादृष्टि प्राप्त हुई। जब उसे इसलिए बन्दीगृह में डाला गया क्योंकि उसके स्वामी की पत्नी को वह बहुत आकर्षक लगता था, तो उसे बन्दीगृह के दारोगा ने बन्दीगृह का प्रभारी बना दिया। अनेकों कठिनाइयों को सहने के बावजूद, यूसुफ़ एक उत्कृष्ट और आदरणीय परमेश्वर का जन बना। जो भी यूसुफ़ करता था उसमें "प्रभु यूसुफ़ के संग था" (39:2, 21)।

यूसुफ़ की पोतीपर के घर का निरीक्षक बनने की पदोन्नति (39:1-6)

[1]जब यूसुफ़ मिस्र में पहुंचाया गया, तब पोतीपर नाम एक मिस्री, जो फ़िरौन का हाकिम, और अंगरक्षकों का प्रधान था, उसने उसको इश्माएलियों के हाथ, से जो उसे वहां ले गए थे, मोल लिया। [2]यूसुफ़ अपने मिस्री स्वामी के घर में रहता था, और यहोवा उसके संग था; सो वह भाग्यवान पुरुष हो गया। [3]और यूसुफ़ के स्वामी ने देखा, कि यहोवा उसके संग रहता है, और जो काम वह करता है उसको यहोवा उसके हाथ से सफल कर देता है। [4]तब उसकी अनुग्रह की दृष्टि उस पर हुई, और वह उसकी सेवा टहल करने के लिये नियुक्त किया गया: फिर उसने उसको अपने घर का अधिकारी बना के अपना सब कुछ उसके हाथ में सौंप दिया। [5]जब से उसने उसको अपने घर का और अपनी सारी सम्पत्ति का अधिकारी बनाया, तब से यहोवा यूसुफ़ के कारण उस मिस्री के घर पर आशीष देने लगा; और क्या घर में, क्या मैदान में, उसका जो कुछ था, सब पर यहोवा की आशीष होने लगी। [6]इसलिए उसने अपना सब कुछ यूसुफ़ के हाथ में यहां तक छोड़ दिया: कि अपने खाने की रोटी को छोड़, वह अपनी सम्पत्ति का हाल कुछ न जानता था। और यूसुफ़ सुन्दर और रूपवान था।

आयत 1. इस अध्याय का आरंभ 37:36, की घटनाओं को दोहराने के साथ

होता है, जहाँ बताया गया है कि **यूसुफ़** के भाइयों ने उसे **मिस्र** में दासत्व में कैसे बेचा। वहाँ उसे पोतीपर नामक व्यक्ति ने खरीदा। **पोतीपर** नाम का अर्थ है "वह जिसे रे [सूर्य देवता] ने दिया है" और यह संभवतः "पोतीफेरा"[1] का संक्षिप्त रूप है। इसी नाम का एक भिन्न व्यक्ति बाद में यूसुफ़ का ससुर बना (41:45, 50; 46:20)।

पोतीपर का पहला वर्णन **फ़िरौन के हाकिम** के रूप में है। शब्द "हाकिम" (סָרִיס, *सारिस)* का अर्थ है "राज-दरबार का अधिकारी"; यह अक्केडी पदवी से आया है जिसका अर्थ होता है "शिरोमणि (राजा) का एक।" बहुत बाद में इस शब्द का अर्थ राजा की सेवा में काम करने वाला "नपुंसक" (नामर्द किया गया) हुआ।[2] यहाँ यह शब्द फ़िरौन के एक उच्च अधिकारी और विवाहित पुरुष के लिए प्रयोग हुआ है।

इसके बाद, पोतीपर को अंगरक्षकों का प्रधान कहा गया है (देखें 40:3, 4; 41:10, 12)। शब्द "प्रधान" (שַׂר, *शार)* का अनुवाद "शासक" या "प्रधान" भी किया जा सकता है। पोतीपर फ़िरौन के "अंगरक्षकों" का प्रधान था। यह शब्द טַבָּח *(तब्बाच)*, के बहुवचन का अनुवाद है, जो ऐसे अंगरक्षक को दिखाता है जो जल्लाद का काम भी करता था।[3] पोतीपर संभवतः राजा की सुरक्षा का तथा अपराधियों और समाज के शत्रुओं को दण्ड देने वालों का निरीक्षक था (देखें 2 राजा 25:8-21; यिर्म. 39:9-14)।

इस विश्वासयोग्य अधिकारी ने यूसुफ़ को **इश्माएलियों** या मिद्यानियों से खरीदा था (37:25, 27, 28, 36), जिन्होंने उस जवान पुरुष को उसके भाइयों से कनान में खरीदा था। इशमाएली उसे मिस्र की राजधानी में लेकर आए थे।

आयत 2. यद्यपि यूसुफ़ के भाई उस से नफ़रत करते थे, परमेश्वर की उसके लिए एक योजना थी। वाक्यांश **यहोवा उसके संग था** (देखें 39:3, 21, 23[4]) सफलता, संपन्नता, या विजय को दिखाता है। केवल संदर्भ ही इस वाक्यांश का सही तात्पर्य निर्धारित कर सकता है; लेकिन यहाँ, स्पष्टतः, इसका अर्थ है कि परमेश्वर की आशीषें यूसुफ़ पर थीं, **इसलिए वह भाग्यवान पुरुष हो गया।** परमेश्वर की दूरदर्शिता से, **वह अपने मिस्री स्वामी के घर में रहता था।**

आयत 3. पोतीपर स्वयं इस बात को जान गया कि यूसुफ़ अन्य दासों से भिन्न है, जो बहुधा अप्रसन्न रहने वाले, ढीठ और अविश्वासयोग्य होते थे। उनकी तुलना में, **उसके स्वामी ने देखा कि यहोवा उसके संग रहता है** और जो कुछ भी वह दास करता उससे वह परिश्रम तथा सावधानी से **करवाता** था। परमेश्वर की सहायता से, यूसुफ़ को दिया गया प्रत्येक कार्य सफलतापूर्वक होता था, **उसके हाथ से** उन्नत होता था।

पोतीपर, अवश्य ही, मिस्री देवताओं की उपासना करता था; परन्तु उसने सीखा - प्रत्यक्षतः यूसुफ़ से ही - कि उसका दास "प्रभु" (यहोवा) का उपासक है। पोतीपर इस जवान इब्री[5] के ईश्वर को लेकर उदार था, उसे इसकी परवाह नहीं थी कि वह किस ईश्वर की उपासना करता है, जब तक कि वह उसे सौंपे गए कार्य पूरे कर रहा था।

आयत 4. इसलिए **यूसुफ़ पर उसके स्वामी के अनुग्रह की दृष्टि हुई**, और पोतीपर ने उसे अपना **निज दास** बना लिया। कुछ समय के बाद पोतीपर ने उसे और अधिकार रखने का और ऊँचा पद दिया, और उसे **अपने घर का निरीक्षक** बना दिया, और अपना **सब कुछ उसके हाथ में सौंप दिया**। यह ऐसे जवान पुरुष के लिए प्रभावशाली नियुक्ति थी।

आयतें 5, 6. जब से उस पोतीपर ने उसे यूसुफ़ अपने घर का तथा **अपने सब कुछ का अधिकारी बनाया** था, **प्रभु ने यूसुफ़ के कारण मिस्री के घराने पर आशीष दी**। जैसे कि प्रभु ने लाबान को याकूब की सेवकाई से आशीषित किया था (30:27, 30), अब वह पोतीपर को यूसुफ़ की सेवकाई से आशीषित कर रहा था। यद्यपि लेखक ने यह विशेष रूप से नहीं बताया है कि यूसुफ़ ने क्या हासिल किया और कैसे किया, हम अनुमान लगा सकते हैं कि उसने अन्य दासों के साथ व्यवहार की अधिक मानवीय नीति स्थापित की होगी। यदि उसने उनके साथ अधिक गरिमा और आदर का व्यवहार किया होगा, तो यह कल्पना करना कठिन नहीं है कि प्रत्युत्तर में वे अधिक परिश्रमी सेवक बने होंगे जिससे वे अपने कार्यों में अधिक फलवंत हुए होंगे। इस वृतांत का कुल योग यह कथन है कि **क्या घर में, क्या मैदान में, उसका जो कुछ था सब पर यहोवा की आशीष होने लगी**। उत्पत्ति में "आशीष" का तात्पर्य सामान्यतः भौतिक संपदा और संपन्नता से है (24:35; 26:12, 13; 30:30), इसलिए हम यह मान सकते हैं कि पोतीपर की धन-संपत्ति बहुत बढ़ गई। यह आते समय में यूसुफ़ के निर्देशन में फ़िरौन और सारे मिस्र पर आने वाली अशीष का अग्रदूत था (41:49; 47:13-26)। परमेश्वर की उस पर बहुतायत की आशीष का जो कुछ (पोतीपर) का था परिणाम यह हुआ कि **उसने अपना सब कुछ यूसुफ़ के हाथ में छोड़ दिया और अपने खाने की रोटी को छोड़ वह अपनी संपत्ति का हाल कुछ ना जानता था**। हो सकता है कि पोतीपर का भोजन "मिस्त्रियों की रीतियों के अनुसार सही रीति से पकाया जाना आवश्यक था (जो एक परदेशी न तो जानता होगा और न ही वैधानिक रीति से कर सकता होगा)।"[6]

पोतीपर की पत्नी का यूसुफ़ को लुभाना (39:6-18)

[6]इसलिए उसने अपना सब कुछ यूसुफ़ के हाथ में यहां तक छोड़ दिया: कि अपने खाने की रोटी को छोड़, वह अपनी सम्पत्ति का हाल कुछ न जानता था। और यूसुफ़ सुन्दर और रूपवान था। [7]इन बातों के पश्चात ऐसा हुआ, कि उसके स्वामी की पत्नी ने यूसुफ़ की ओर आंख लगाई; और कहा, "मेरे साथ सो।" [8]पर उसने अस्वीकार करते हुए अपने स्वामी की पत्नी से कहा, "सुन, जो कुछ इस घर में है मेरे हाथ में है; उसे मेरा स्वामी कुछ नहीं जानता, और उसने अपना सब कुछ मेरे हाथ में सौंप दिया है। [9]इस घर में मुझ से बड़ा कोई नहीं; और उसने तुझे छोड़, जो उसकी पत्नी है; मुझ से कुछ नहीं रख छोड़ा; सो भला, मैं ऐसी बड़ी दुष्टता कर के परमेश्वर का अपराधी क्योंकर बनूं?" [10]और ऐसा हुआ, कि वह प्रति

दिन यूसुफ़ से बातें करती रही, पर उसने उसकी न मानी, कि उसके पास लेटे वा उसके संग रहे। 11एक दिन क्या हुआ, कि यूसुफ़ अपना काम काज करने के लिये घर में गया, और घर के सेवकों में से कोई भी घर के अन्दर न था। 12तब उस स्त्री ने उसका वस्त्र पकड़कर कहा, "मेरे साथ सो," पर वह अपना वस्त्र उसके हाथ में छोड़कर भागा, और बाहर निकल गया। 13यह देखकर, कि वह अपना वस्त्र मेरे हाथ में छोड़कर बाहर भाग गया, 14उस स्त्री ने अपने घर के सेवकों को बुलाकर कहा, "देखो, वह एक इब्री मनुष्य को हमारा तिरस्कार करने के लिये हमारे पास ले आया है। वह तो मेरे साथ सोने के मतलब से मेरे पास अन्दर आया था और मैं ऊंचे स्वर से चिल्ला उठी। 15और मेरी बड़ी चिल्लाहट सुनकर वह अपना वस्त्र मेरे पास छोड़कर भागा, और बाहर निकल गया।" 16और वह उसका वस्त्र उसके स्वामी के घर आने तक अपने पास रखे रही। 17तब उसने उस से इस प्रकार की बातें कहीं, कि "वह इब्री दास जिस को तू हमारे पास ले आया है, सो मुझ से हंसी करने के लिये मेरे पास आया था। 18और जब मैं ऊंचे स्वर से चिल्ला उठी, तब वह अपना वस्त्र मेरे पास छोड़कर बाहर भाग गया।"

आयतें 6, 7. यहाँ तक, यद्यपि वह दास था, मिस्र में यूसुफ़ के साथ सब कुछ अच्छा ही हुआ था। वह अपने स्वामी की अधीनता में स्तर और अधिकार में बढ़ गया था। परन्तु उसकी स्थिति बहुत बदल गई जब पोतीपर की **पत्नी** उसके प्रति आकर्षित हुई। क्योंकि **वह सुन्दर और रूपवान था, उसने यूसुफ़ की ओर आँख लगाई**, और उससे आग्रह किया कि **"मेरे साथ सो।"** इतनी स्पष्टता से यह आग्रह किया जाना इस बात का सांकेतिक हो सकता है कि एक दास के सामने यह माँग पहली बार नहीं रखी गई थी। अधिकांश ने तो उसके इस यौन आमंत्रण को प्रसन्नता से स्वीकारा होगा, लेकिन उसे सीखना था कि यूसुफ़ कोई मूर्तिपूजक अन्यजाति नहीं था जो किसी अन्य पुरुष की पत्नी के साथ ऐसे संबंधों का स्वागत करेगा। वह नैतिक सत्यनिष्ठा रखता था और उसके प्रलोभन के आधीन नहीं हुआ।

आयत 8. यूसुफ़ ने उसके आग्रह को **ठुकरा** दिया, परन्तु ठुकराने के लिए जो कारण उसने दिए वे उन तर्कों के समान हैं जो कोई अन्य पुरुष उस आग्रह को स्वीकार कर लेने के लिए देता। प्रथम, यूसुफ़ ने अपने पर्यवेक्षण से स्वतंत्र होने का उल्लेख किया: उसका **स्वामी घर की किसी बात के बारे में कुछ नहीं जानता परन्तु सब कुछ, जो कुछ भी उसका है, उसके हाथ में कर दिया है**।

आयत 9. दूसरा, उसने अपनी त्वरित तरक्की का हवाला दिया: इस घर में **मुझ से बड़ा कोई नहीं है**। इस स्तर का विश्वास और उत्तरदायित्व किसी अन्य पुरुष को बिगाड़ सकता था और उसे यह समझने दे सकता था कि वह पोतीपर की पत्नी का लाभ उठा ले, यद्यपि उसके स्वामी ने उसे छोड़ **और कुछ उससे रख ना छोड़ा था**। इस अनैतिक आचरण के विरुद्ध यूसुफ़ का तर्क दो बातों पर आधारित था :क्योंकि यह उसके स्वामी के साथ विश्वासघात होगा इसलिए **यह बहुत बड़ी बुराई होगी**, और यह **परमेश्वर के विरुद्ध पाप** होगा।[7] जब यूसुफ़ ने इस मिस्री स्त्री से बात की तो उसने सामान्य शब्द "परमेश्वर" प्रयुक्त किया न कि

वाचा का विलक्षण शब्द "प्रभु" (याहवह), जिसका उस मूर्तिपूजक अन्यजाति के लिए कोई मतलब नहीं था। किंतु इन शब्दों के द्वारा भी, यूसुफ़ द्वारा उसके चापलूसी तथा प्रलोभन भरे आग्रह को ठुकराने का स्पष्ट सिद्धांत था कि यह नैतिक और आत्मिक रीति से गलत होगा। निःसन्देह, प्राचीन मिस्र के अनैतिक संसार में, उसने कभी ऐसा विवेक रखने वाला कोई ऐसा दास नहीं देखा था।

आयत 10. पोतीपर की पत्नी ने यूसुफ़ के प्रतिरोध को थका कर अभिभूत करने के लिए **प्रतिदिन** यूसुफ़ से बातें कीं। (शिमशोन के साथ दलीला के हठ के लिए देखें न्यायियों 14:17; 16:16, 17.) उसके चरित्र की दृढ़ता इस बात से प्रकट है कि **उसने उसकी न मानी कि उसके पास लेटे या उसके संग रहे**। वह उसके आगे बढ़ने को किसी प्रकार से प्रोत्साहित नहीं करना चाहता था और न ही घर के भीतर आकर उन्हें एक साथ सीधी-सादी बातचीत भी करते हुए देखने वाले किसी व्यक्ति पर कोई गलत प्रभाव छोड़ना चाहता था। यूसुफ़ ने उसके "संग भी न रहने" के द्वारा अपने तथा उसके मध्य एक सुरक्षा सीमा स्थापित करने की बुद्धिमानी की।

आयतें 11, 12. समस्या यह थी कि वह उससे पूर्णतया बच कर नहीं रह सकता था। एक बार **जब वह घर में अपना कार्य करने गया** तब कोई अन्य पुरुष दास वहाँ नहीं थे। इस परिस्थिति का उसने लाभ उठाया। इस बार वह उससे अपने साथ संबंध बनाने के लिए केवल आग्रह नहीं कर रही थी; उसने उग्र होकर **उसके वस्त्र को पकड़ा** और हठ किया कि **"मेरे साथ सो!"** जब उसने यूसुफ़ का वस्त्र पकड़ा, तब संभवतः वह उसे अपने साथ किसी शय्या या बिस्तर पर आने के लिए खींच रही थी। लेकिन यूसुफ़ ने संघर्ष कर के अपने आप को स्वतंत्र किया और भाग गया। ऐसा करते हुए वह अपना वस्त्र उसके हाथ में छोड़ कर भागा और बाहर निकल गया। इब्रानी भाषा में "वस्त्र" के लिए प्रयुक्त शब्द (בֶּגֶד, *बेगेद*) एक सामान्य शब्द है जो अनेक प्रकार के वस्त्रों के लिए प्रयोग हो सकता है। कुछ अनुवादों के अनुसार वह यूसुफ़ का ऊपरी वस्त्र या "बागा" था (NEB; NIV; NLT)। यदि उसने बागा पहना हुआ होता, तो पोतीपर की पत्नी के लिए उससे छीनने के लिए वह सबसे सरल वस्त्र होता।

आयत 13. यूसुफ़ का भाग कर बाहर निकलना उस स्त्री की गढ़ी हुई कहानी को कमज़ोर बना सकता था यदि वह बाहर जाकर तुरंत ही अन्य दासों को बता देता कि क्या हुआ। लेकिन सिवाय बचने के अन्य कुछ भी सोचे बिना, **वह अपना वस्त्र उसके हाथ में छोड़कर बाहर भाग गया**। यूसुफ़ के मस्तिष्क में केवल एक ही बात थी - वह जिस परिस्थिति में था उस से निकल जाए। उसका मानना था कि उसके लिए यह तीव्रता से कार्य करने का समय है।

आयतें 14, 15. इस कारण वह उस वस्त्र को यूसुफ़ के विरुद्ध उन घटनाओं के प्रमाण के लिए प्रयोग कर सकी।[8] उसने अवसर का लाभ उठाया और **अपने घर के लोगों** के समक्ष यूसुफ़ पर दोष लगाया। उसने सर्वप्रथम दोषी अपने पति पोतीपर को ठहराया क्योंकि उसने कहा **"देखो, वह एक इब्री मनुष्य को हमारा तिरस्कार करने के लिये हमारे पास ले आया है।"** अभिव्यक्ति "तिरस्कार करने"

(צָחַק, *ज़ाख़ाक)* का अर्थ "मूर्ख बनाने" के समान है (NJB); KJV में आया है "उपहास" और NRSV ने इसे "अपमान" अनुवाद किया है (देखें 21:9; 26:8 पर टिप्पणियाँ)। पोतीपर की पत्नी निर्लज और दुस्साहसिक स्त्री थी, और उसने अपने आप को बचाने के लिए अपने पति को अपने ऊपर बलात्कार के प्रयत्न का दोषी ठहराया। उसने मिस्त्रियों के यहूदियों को सहन न करने की प्रवृत्ति का भी उपयोग कर के घर के दासों को यूसुफ़ के विरुद्ध करना चाहा उसे "इब्री" और इसकी तुलना में घर के शेष सभी लोगों को "हमारे" कह कर।

यूसुफ़ के विरुद्ध उसका दोष था कि: "**वह तो मेरे साथ सोने के मतलब से मेरे पास अन्दर आया था** [मुझ से बलात्कार करने]।" उसने दावा किया कि जब उसने ज़ोर लगाकर इसका प्रतिरोध किया तथा उसकी बड़ी चिल्लाहट सुनकर वह **अपना वस्त्र** [मेरे] **पास छोड़कर भागा**, और बाहर निकल गया। उसका इस बात पर ज़ोर देना कि वह "चिल्लाई" थी यह दिखाने के लिए था कि उसने उसके और आगे बढ़ने का प्रतिरोध किया था। इससे उसे खुद को किसी भी प्रकार दोषी होने से बचने में सहायता मिली।[9]

आयत 16. लेख यह नहीं बताता है कि पोतीपर कितने समय के पश्चात लौट कर आया, परन्तु उसकी पत्नी ने इस कहानी को बड़े ही नाटकीय रूप में बताया। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए, **वह उसका वस्त्र उसके स्वामी के घर आने तक अपने पास रखे रही।**

आयतें 17, 18. वही कहानी जो उसने घर के दासों को सुनाई थी उसने उसे फिर दोहराया (39:14, 15)। उसने आरंभ किया **इब्री दास** को घर में लाने और उसे अधिकार देने के द्वारा अपने पति को अपने ऊपर बलात्कार के प्रयास का दोषी ठहराया। उसने फिर यूसुफ़ पर दोष लगाया कि उसका तिरस्कार (बलात्कार का प्रयास) करके उसने अपने अधिकार का दुरुपयोग किया है। लेकिन, उसने इस बात पर ज़ोर दिया कि उसके प्रतिरोध करने और **चिल्लाने के कारण वह अपना वस्त्र** [उसके] **पास छोड़कर भाग गया।**

यूसुफ़ का बन्दीगृह में डाला जाना झूठे दोषारोपण के कारण (39:19-23)

[19]अपनी पत्नी की ये बातें सुनकर, कि तेरे दास ने मुझ से ऐसा ऐसा काम किया, यूसुफ़ के स्वामी का कोप भड़का। [20]और यूसुफ़ के स्वामी ने उसको पकड़कर बन्दीगृह में, जहां राजा के कैदी बन्द थे, डलवा दिया: अतः वह उस बन्दीगृह में रहने लगा। [21]पर यहोवा यूसुफ़ के संग संग रहा, और उस पर करुणा की, और बन्दीगृह के दरोगा के अनुग्रह की दृष्टि उस पर हुई। [22]इसलिए बन्दीगृह के दरोगा ने उन सब बन्दियों को, जो कारागार में थे, यूसुफ़ के हाथ में सौंप दिया; और जो जो काम वे वहां करते थे, वह उसी की आज्ञा से होता था। [23]यूसुफ़ के वश में जो कुछ था उस में से बन्दीगृह के दरोगा को कोई भी वस्तु देखनी न पड़ती थी; क्योंकि यहोवा यूसुफ़ के साथ था; और जो कुछ वह करता

था, यहोवा उसको उस में सफलता देता था।

आयतें 19, 20. पोतीपर की **पत्नी** ने जो स्पष्टीकरण दिया, उसका वांछित प्रभाव हुआ। जब पोतीपर ने उसे कहते सुना, **"तेरे दास ने मेरे साथ ऐसा किया है," तो यूसुफ़ के के स्वामी का कोप भड़का।** उसने यूसुफ़ को **बन्दीगृह में जहाँ राजा के कैदी बन्द थे** डलवा दिया, और वह बन्दीगृह या "जेल" में रहा (NIV; NRSV)। इब्रानी लेख वास्तव में इस स्थान को "गोल घर" (בֵּית הַסֹּהַר, *बेयथ हस्सोहर)* कहता है, परन्तु इस अभिव्यक्ति का सटीक अर्थ अनिश्चित है। NEB कहती है कि बन्दीगृह "गोल मीनार" था। एक अन्य संभावना है कि यह विवरण "कालकोठरी" से आया है, जो बड़े गोलाकार कुण्ड होते थे (देखें 40:15 पर टिप्पणी)।

इस वृतांत का संक्षिप्त होना उलझाने वाला है क्योंकि इससे अनेकों प्रश्न अनुत्तरित रह जाते हैं। प्रथम, क्योंकि लेख इसके बारे में कुछ नहीं कहता है कि यूसुफ़ ने उसके विरुद्ध पोतीपर की पत्नी द्वारा लगाए गए झूठे दोषों के लिए अपने बचाव में क्या कहा, इसलिए क्या यह संभव है कि वह कुछ कह ही नहीं पाया? दूसरे, यदि यूसुफ़ उसके दोषों के विरुद्ध अपने बचाव में कुछ बोल पाया था तो अपने स्वामी को क्यों समझा नहीं सका, जिसने फिर उसे बंदीगृह में डलवा दिया? तीसरे, यदि पोतीपर इस बात से संतुष्ट था कि यूसुफ़ उसकी पत्नी से बलात्कार करने के प्रयास का दोषी है, तो उसने उसे मृत्यु दण्ड क्यों नहीं दिलवाया, जो उस समय में ऐसे दोषों के लिए प्राचीन निकट पूर्व में दिया जाने वाला दण्ड था?

वृतांत इन प्रश्नों का कोई निश्चित उत्तर प्रदान नहीं करता है; परन्तु संभव है कि पोतीपर को शंका रही हो कि जो उसे सुनाया गया है, कहानी में उससे कहीं अधिक है। क्या उसके पास कोई कारण था कि वह यह समझता कि उसकी पत्नी उसके विषय में जो कुछ वास्तव में उन दोनों के मध्य हुआ था, उससे झूठ बोल रही है? क्या पहले भी उस इब्री दास जैसे जवान सुन्दर पुरुषों के साथ संबंध रखने का उसका इतिहास था? निश्चय ही पोतीपर के सामने दुविधा थी। यदि वह अपनी पत्नी पर विश्वास करता तो उसे उस जवान दास को मरवा देना चाहिए था। यदि वह यूसुफ़ पर विश्वास कर के उसे सारे दोषारोपण से मुक्त करता, तो उसका वैवाहिक जीवन नहीं बच पाता। पोतीपर ने कार्य करने के लिए दोनों के मध्य का मार्ग चुना: क्योंकि यूसुफ़ के विरुद्ध प्रमाण अनिश्चित थे, साथ ही उसकी पत्नी के कार्यों के बारे में भी सन्देह थे, उसने इब्री को मृत्युदण्ड की बजाय बन्दीगृह में भेज दिया।

आयत 21. इस अध्याय का दूसरा प्रमुख भाग भी वैसे ही आरंभ होता है जैसे पहला भाग हुआ था: **यहोवा यूसुफ़ के संग था** (देखें 39:2)। यह कथन यूसुफ़ के जीवन में परमेश्वर के कार्य का अंगीकार करता है। यहोवा उसकी रक्षा करता था और उसके लिए प्रावधान करता था। यद्यपि उसने यूसुफ़ को दुःखदायी परीक्षाओं में हो कर निकलने से नहीं बचाया, उसने उन में भी उसकी रक्षा की।

लेख यह भी बताता है कि यहोवा ने अपनी **करुणा** (חֶסֶד, *चेसड)* यूसुफ़ पर की। इस आशीष को NRSV में "अटल प्रेम" कहा गया है और KJV में "करुणा।" यूसुफ़ जिन परिस्थितियों को झेल रहा था उनके समक्ष यह विचार विरोधाभास प्रतीत हो सकता है। दास और विश्वासयोग्य प्रबन्धक होने पर भी उसके स्वामी ने अन्यायपूर्वक उसे बन्दीगृह में डलवा दिया था। लेकिन फिर भी, परमेश्वर ने बन्दीगृह के **दरोगा के अनुग्रह** (חֵן, *चेन)* की दृष्टि उस पर की। हमें यह नहीं बताया गया है कि परमेश्वर ने कैसे यह किया, परन्तु निःसन्देह यूसुफ़ ने बन्दीगृह के दारोगा की आज्ञाओं पालन करते हुए यह दिखाया होगा कि वह विश्वासयोग्य बन्दी हो सकता है।

आयत 22. एक बार फिर यूसुफ़ के परिश्रमी तथा विश्वासयोग्य होने के अच्छे गुण इतने प्रगट थे कि वह इस स्थिति में संभव सबसे उच्च पद तक पहुँच गया। **बन्दीगृह के दारोगा** ने **उन सब बन्धुओं को, जो कारागार में थे, यूसुफ़ के हाथ में सौंप दिया। जो जो काम वे वहां करते थे, वह उसी की निगरानी में होता था**। स्वाभाविक है कि ऐसा करने से उस दारोगा पर से एक उसका समय लेने वाला बोझ हट गया।

आयत 23. विश्वास की दृष्टि से, हम पृष्ठभूमि में, यूसुफ़ के जीवन में होने वाले परमेश्वर के कार्य देख सकते हैं। उस पर और उसके आस-पास वालों पर आशीष आई क्योंकि **यहोवा यूसुफ़ के साथ था** (39:2, 3, 21)। जिस भी कार्य पर उसका ध्यान जाता, **यहोवा उसे सफल और उन्नत कर देता**।

अनुप्रयोग

संघर्ष के मध्य विश्वास (अध्याय 39)

इब्रानियों के लेखक ने कहा है, "अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है। क्योंकि इसी के विषय में प्राचीनों की अच्छी गवाही दी गई" (इब्रा. 11:1, 2)। विश्वास के द्वारा यूसुफ़ ने परमेश्वर के अनुमोदन को प्राप्त किया।

हताशा के स्थान पर विश्वास। मिस्री दासत्व में यूसुफ़ ने हताशा के स्थान पर विश्वास को चुना। एक धनी तथा सामर्थी चरवाहे का, जिसके पास अनेकों दास थे, प्रिय पुत्र होने के नाते यूसुफ़ ने आराम का जीवन व्यतीत किया होगा। उसे कम ही उत्तरदायित्व दिए गए होंगे, और यह प्रतीत होता है कि उसके आगे एक उज्जवल भविष्य रखा हुआ था। परन्तु उसके भाई उसके प्रिय होने को (जो उसके विशेष कुरते से प्रकट था) या उसके अद्भुत स्वप्नों को सहन नहीं कर सके। उसे और सहन न कर सकने के कारण, उन्होंने उसे दासत्व में बेच दिया। जब काफ़िले के व्यापारियों ने यूसुफ़ को मिस्र ले जाकर दास होने के लिए बेच दिया, तो एक नियति जिससे निकल पाने का कोई मार्ग न होना, और उसके भाइयों के विश्वासघात के सदमे ने उसे अभिभूत कर दिया होगा। उसका सारा संसार उसकी आँखों के समक्ष बिखर गया, और उसकी तुरंत की प्रतिक्रिया जीवन से

हताश होने की रही होगी। इस सत्रह वर्षीय युवक को लगा होगा कि उसकी सारी आशा मिट्टी में मिल गई है। मिस्र में दास के न तो कोई अधिकार होते थे और न ही कोई सुविधाएं; उनके स्वामियों की दृष्टि में वे जीवत उपकरण होते थे जिन्हें उपयोग, दुरुपयोग, या यदि वे अपने स्वामी के अनाज्ञाकारी हों तो मार डालने की दृष्टि से देखा जाता था।

उस समय, यूसुफ़ के पास दो ही विकल्प थे: विश्वास या हताशा। एक प्रेम करने वाला परमेश्वर जिसके पास उसके जीवन के लिए योजना थी और जो उसकी प्रार्थनाएं सुनता था, में यदि विश्वास न हो तो दास होकर जीने और दुःख उठाने से क्या मिलता? आशा के बिना लोग जीने के लिए उद्देश्य और कारण खो देते हैं। बाइबल के लेखक ने कहा है "अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है" (इब्रा. 11:1)। दूसरे शब्दों में, विश्वास व्यक्ति को अनदेखी और "अभी नहीं" के साथ जीवन जीने की क्षमता प्रदान करता है। परमेश्वर में विश्वास के द्वारा उसकी सन्तान बने लोगों के लिए अनदेखी संभावनाएं वास्तविक हो जाती हैं। यदि आवश्यक हो तो, बेहतर भविष्य के लिए, वे हानि को भी सह लेते हैं। विश्वास और आशा जीवन में अत्यन्त कठिन और दुस्साहसिक परिस्थितियों में भी लोगों को जीवत रखने वाले आवश्यक अंश हैं।

बन्धुआई के शिविरों से जीवित निकल आने वाले लोगों की कहानियों में बहुधा आने वाला विषय होता है उनका विश्वास जिसने उन्हें बन्दीगृह के पहरेदारों के अमानवीय व्यवहार में भी जीवित रखा। विश्वास ही ने आरंभिक मसीहियों को, जिन्हें भिन्न रोमी शासकों के हाथों पहली तीन शताब्दी ई. में यातनाओं और मृत्यु दण्ड का सामना करना पड़ा, संभाले रखा। अनेकों शहीद परमेश्वर की स्तुति के गीत गाते हुए मारे गए, जिससे उनके सताने वालों को बहुत विस्मय हुआ। इन मसीहियों को कोई हताशा नहीं हुई क्योंकि उन्हें मृतकों में से जी उठे अपने प्रभु और उद्धारकर्ता, यीशु मसीह, के द्वारा एक महान और महिमामय पुनरुत्थान की आशा थी (2 तीमु. 2:3, 8-10; 4:6-8; 1 यूहन्ना 3:1-3)।

यूसुफ़ के पास अभी एक मसीही शहीद का विश्वास, जो कि विजयी जीवित विश्वास के साथ मृत्यु स्वीकार करता है, नहीं था। फिर भी, उसने विश्वास को चुना; और परमेश्वर में उसका विश्वास इतना दृढ़ हो गया, कि उसका नाम इब्रानियों के लेखक द्वारा पुराने नियम के विश्वास के नायकों में गिना गया (इब्रा. 11:22)।

परमेश्वर के हाथ को देखने वाला विश्वास। यूसुफ़ के मिस्र में आने के थोड़े ही समय के पश्चात पोतीपर ने पहचान लिया कि वह अन्य दासों से भिन्न है। वह रूखा, कड़वाहट से भरा, और अविश्वासयोग्य होने की बजाय, उसे दिए गए कार्यों को पूरा करने में परिश्रमी था, तथा अपने स्वामी को प्रसन्न करने की इच्छा रखता था। यूसुफ़ का यह सकारात्मक रवैया परमेश्वर में उसके विश्वास का सीधा परिणाम था। उसके इस बात से अवगत रहने के, कि एक सच्चा और सामर्थी

परमेश्वर उसपर दृष्टि बनाए हुए है, उसे अपने ऊपर दया करते रहने की कीचड़ में लोटने से बचाए रखा तथा उसे सामर्थ्य दी कि वह अपने स्वामी के लिए उपयोगी हो सके।

यूसुफ़ के हृदय में विश्वास के बीज उसके बचपन ही में बो दिए गए थे। उसने याकूब की गवाही को सुना था कि कैसे परमेश्वर ने उसके कठिन समयों में उसकी प्रार्थनाओं को सुना था और जहाँ भी वह गया उसके साथ रहा था (35:3)। बेतेल में, उसके पिता ने रुक कर एक और वेदी बनाई थी, और उस स्थान को "एल बेतेल" ("परमेश्वर के घर का परमेश्वर") कहा था क्योंकि परमेश्वर ने वहाँ रात के अन्धकार में, जब वह अकेला और निःसहाय था, उसे दर्शन दिया था (35:7)।

जब यूसुफ़ को बेड़ियों से बंधे हुए व्यापारियों के काफ़िले के पीछे दोतान से मिस्र को बाध्य होकर जाना पड़ा, उसके पास अपने बीते हुए जीवन में याकूब का प्रिय पुत्र होने के बारे में विचार करने और भविष्य के बारे में चिंता करने के लिए बहुत समय था। प्रत्यक्षतः, उसने उस परमेश्वर को स्मरण रखा जिसने उसके पिता याकूब को बड़ी कठिनाइयों में भी आशीष दी थी; और उसने अपने दादा इसहाक और परदादा अब्राहम पर परमेश्वर की आशीषों की कहानियाँ भी सुनी होंगी। इन में से प्रत्येक पूर्वज ने गवाही दी कि परमेश्वर ने उसके साथ रहने की प्रतिज्ञा की है; और याहवह उन प्रतिज्ञाओं के प्रति विश्वासयोग्य रहा है जो उसने कीं, उन्हें आशीष देता रहा और हानि से बचाता रहा। मिस्र की वह लंबी पैदल यात्रा वास्तव में छिपी हुई आशीष थी, क्योंकि इससे यूसुफ़ को समय मिला कि वह स्मरण कर सके कि वह सारे संसार को आशीषें पहुँचाने के लिए परमेश्वर के चुने हुए लोगों में से एक है। चाहे उसे यह समझ न भी आया हो कि परमेश्वर की योजना में उसका क्या स्थान है, यूसुफ़ यह मानने लग गया था कि मिस्र में उसके लिए परमेश्वर की कोई योजना हो सकती है। उसने ठान लिया कि वह हताश नहीं होगा, न ही यह सोचेगा कि मिस्र में दास होना ही उसके जीवन का अन्त है। इसके विपरीत, उसने "निराशा में भी आशा रखकर विश्वास किया" (देखें रोमियों 4:18) कि यदि वह एक परिश्रमी और विश्वासयोग्य दास बन जाए तो जीवन में उसका कोई उद्देश्य और भविष्य हो सकता है।

मिस्र में, यूसुफ़ का विकास विश्वास, भले कार्यों और उत्तरदायित्व लेने वाले व्यक्ति के रूप में हुआ। लेख बताता है कि "यूसुफ़ के स्वामी ने देखा, कि यहोवा उसके संग रहता है, और जो काम वह करता है उसको यहोवा उसके हाथ से सफल कर देता है" (39:3)। पोतीपर के यह जानने का एकमात्र तरीका, कि यूसुफ़ के सारे कार्यों पर याहवह की अशीष है, था कि वह दास अपने स्वामी के सामने अपने विश्वास के बारे में अंगीकार करे। मिस्रियों के कई देवता थे, परन्तु संभव है कि यह पहला अवसर था जब पोतीपर ने इब्रियों के परमेश्वर के बारे में सुना। वह इस बात से बहुत प्रभावित हुआ होगा कि यूसुफ़ के उस में विश्वास द्वारा उसके चरित्र और जीवन पर ऐसा सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

पवित्रशास्त्र ऐसा कोई संकेत नहीं देता है कि पोतीपर यहोवा में कभी सच्चा विश्वासी बना; लेकिन वह इतना बुद्धिमान तो अवश्य था कि पहचान ले कि

परमेश्वर में यूसुफ़ के विश्वास के कारण उसके जीवन में फ़र्क आया है, जिससे वह एक कर्तव्यनिष्ठ तथा विश्वासयोग्य दास हो गया है। लेख में कहा गया है, "यहोवा यूसुफ़ के कारण उस मिस्री के घर पर आशीष देने लगा" (39:5)। परमेश्वर की अब्राहम को दी गई मूल प्रतिज्ञा अब मिस्र में पूरी होनी आरंभ हो गई (12:2, 3)। जैसे जैसे दिन बीतते गए, पोतीपर ने जो कुछ उसका था, "क्या घर में, क्या मैदान में" यूसुफ़ के आधीन कर दिया। उसके इस निर्णय से पोतीपर के मिस्री मित्र विस्मित हुए होंगे और अन्य दास इस सत्रह वर्षीय इब्री दास से ईर्ष्या करने लगे होंगे। फिर भी इसके द्वारा पोतीपर को अपनी सारी ज़मीन-जायदाद की देख-भाल से छुटकारा मिला; उसके लिए एकमात्र चिंता का विषय उसका भोजन रह गया था (39:5, 6)।

प्रलोभनों पर विजयी करने तथा परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर अधिकार जताने वाला विश्वास। यूसुफ़ के विश्वास ने उसे बलवंत प्रलोभनों, झूठे दोषों, और अन्यायपूर्ण दण्ड पर विजयी होने की सामर्थ्य दी थी। मिस्र में यूसुफ़ के भविष्य के उज्ज्वल होने की संभावनाएं इतनी अच्छी कभी नहीं थीं जितनी तब हो गईं थी जब वह पोतीपर के घर में उसके घर और ज़मीन का निरीक्षक होने का कार्य कर रहा था। फिर, अचानक ही एक अनपेक्षित स्त्रोत से बहुत बलवंत प्रलोभन उसके सामने आ गया: उसके स्वामी की पत्नी की वासना। लेखक ने उल्लेख किया था कि "यूसुफ़ सुन्दर और रूपवान था" (39:6)। क्योंकि ऐसा ही विवरण उसकी माता, राहेल, के लिए भी आया था, उसने अपने कई शारीरिक गुण उससे प्राप्त करे होंगे (29:17)। एक आकर्षक जवान पुरुष होने के कारण, यूसुफ़ पर उसके स्वामी की पत्नी ने आँख लगाई। उसने उसकी ओर "लालसा से देखा" और चकित कर देने वाली माँग रखी "मेरे साथ सो" (39:7)। उसने सोचा होगा, "यह तो मेरे और मेरे पति के लिए कार्य करने वाला इब्री दास मात्र है। मेरा पति यहाँ नहीं है, इसलिए अब मैं अधिकारी हूँ; और उसका कर्तव्य है कि मेरी आज्ञापालन करे।" सार यह है कि उसने यूसुफ़ को व्यक्ति के समान नहीं वरन वासना-पूर्ति की वस्तु समझकर व्यवहार किया।

यूसुफ़ उसके इस वासना संबंध की बात सुनकर दंग रह गया क्योंकि यह अनैतिक था, और वह जानता था कि इन कार्यों के उन दोनों के ही लिए गंभीर परिणाम हो सकते हैं। सैकड़ों वर्षों के पश्चात सुलैमान ने ऐसी स्त्रियों के विरुद्ध जवान पुरुषों को सचेत किया (नीति. 6:20-35; 7:1-27); लेकिन, यूसुफ़ अपने समय में भी व्यभिचार के खतरों से अवगत था। याकूब ने उसे और उसके भाइयों को इस विषय पर कभी सचेत किया होगा, या यह उसके हृदय पर लिखी परमेश्वर की व्यवस्था रही होगी जिस के कारण वह इस अनैतिक निमंत्रण से बच कर रहा (रोमियों 2:14, 15)। इस आचरण संबंधी चेतना को जिसने भी बढ़ाया, यूसुफ़ जानता था कि यह संबंध गलत होगा। यूसुफ़ ने उसकी माँग को मना करने के दो कारण दिए। पहला, उसने कहा कि यह उसमें पोतीपर के विश्वास का हनन होगा क्योंकि उसके स्वामी ने अपनी सारी संपत्ति उसके हाथ में कर रखी है। उसने ज़ोर देकर कहा, "उसने तुझे छोड़, जो उसकी पत्नी है; मुझ से कुछ नहीं रख

छोड़ा" (39:9)। दूसरा, उसने अपने जीवन में परमेश्वर की उपस्थिति के बोध पर ध्यान केंद्रित किया, और पूछा, "सो भला, मैं ऐसी बड़ी दुष्टता कर के परमेश्वर का अपराधी क्योंकर बनूं?" (39:9)। यूसुफ़ ने यह स्पष्ट कर दिया कि परमेश्वर के सामने वह अपनी नैतिक पवित्रता को या उसके पति के प्रति संबंधों की ईमानदारी को उसकी वासना की तृप्ति के लिए बलिदान नहीं करेगा।

यूसुफ़ से कमतर पुरुष उसके गलत इरादों के सामने परास्त हो जाते। वह प्रतिदिन प्रयत्न करती रही कि यूसुफ़ के निर्णय को कमज़ोर करके तोड़ दे और उसे "अपने साथ ले ले" या "अपने साथ लेटा ले" (39:10)। उसे आशा थी कि अन्ततः वह अपना नियंत्रण खो देगा और उसकी वासना को तृप्त कर देगा।

फिर, दासों को अपने निर्णय लेने का कोई अधिकार नहीं होता था; उन्हें अपने स्वामी की आज्ञा का पालन बिना किसी संकोच के करना होता था, वे चाहे कितने भी अप्रसन्न करने वाले क्यों ना हों। निश्चय ही स्वामियों की पत्नियों को पुरुष दासों के साथ संबंध नहीं बनाने होते थे और ऐसा करने पर भारी दण्ड दिया जा सकता था; लेकिन फिर भी कुछ यह जोखिम उठा ही लेती थीं। संभव है कि यूसुफ़ पहला दास नहीं था जिसे पोतीपर की पत्नी ने अपने बिस्तर में आने का निमंत्रण दिया हो, परन्तु संभवतः वह पहला था जिसने उसे मना किया।

यूसुफ़ को अपनी माँग को मानने का एक और अवसर देते हुए, पोतीपर की पत्नी ने ऐसे समय का लाभ उठाया जब बाकी सभी दास घर से बाहर थे। जब यूसुफ़ अपने दैनिक कार्य करने के लिए घर में आया, उसने उसका वस्त्र पकड़ा और कहा "मेरे साथ सो!" लेकिन, उसने तुरंत ही अपने आप को अलग किया और, अपना वस्त्र उसके हाथ में छोड़कर (39:12) बाहर निकल गया। यूसुफ़ के तिरस्कार से उसके अहम को ठेस पहुँची, और उसकी वासना क्रोध, नफ़रत, उसे लज्जित करने तथा उसकी कामवासना को ठुकराने के लिए दण्ड देने में बदल गई।

इस अन्तिम बार ठुकराने के परिणामस्वरूप, उसने यूसुफ़ के विनाश की योजना बनाई। उसने यूसुफ़ से बदला लेने की अपनी योजना केवल इस कारण कार्यान्वित की क्योंकि वह अद्वितीय सदगुण वाला पुरुष था। पुरुष दासों को अपने चारों ओर एकत्रित करने के पश्चात, उसने अपने झूठ को प्रस्तुत किया: उसने कहा कि यूसुफ़ ने उस से बलात्कार करने का प्रयास किया; और फिर जब उसने उसका प्रतिरोध किया तो अपना वस्त्र उसके पास छोड़कर भाग गया (39:14, 15)।

जब पोतीपर लौटकर घर आया तो उसने अपनी कहानी उसके सामने भी दोहराई। परिणामस्वरूप, यूसुफ़ को अन्याय के साथ बन्दीगृह में डाल दिया गया। परन्तु "यहोवा यूसुफ़ के संग संग रहा, और उस पर करुणा की" (39:21)। इस बार परमेश्वर की करुणा बन्दीगृह के दारोगा के हाथों से हुई। जैसा पहले पोतीपर ने किया था, बन्दीगृह के इस अधिकारी ने यूसुफ़ को अधिकार की स्थिति में रख दिया। उसने "उन सब बन्दियों को, जो कारागार में थे, यूसुफ़ के हाथ में सौंप दिया" (39:22), क्योंकि उसने बन्दीगृह में एक विश्वासयोग्य दास के होने के लाभ को देखा था। उसे अब उसे किसी भी बात की जो यूसुफ़ के

ज़िम्मेदारी में थी "देखभाल" नहीं करनी होती थी "क्योंकि यहोवा यूसुफ़ के साथ था" और सब में उसको सफलता देता था (39:23)।

यह उस प्रसंग का आगे बढ़ाना था जो उत्पत्ति 12 में आरंभ हुआ था, जब प्रभु ने अपने लोगों के साथ रहने, उन्हें आशीषित करने, सुरक्षित रखने, और निकाल लाने की प्रतिज्ञा की थी। हम इस प्रतिज्ञा की पूर्ति अब्राहम के जीवन में देखते हैं। मेसोपोटामिया के चार राजाओं के विरुद्ध उसने आकस्मिक हमला कर के लूत और सदोम के लोगों को बचाने के पश्चात (14:13-16), अब्राहम भयभीत तथा। लेख यह नहीं बताता है कि उसके भय का कारण क्या था, परन्तु हम पढ़ते हैं कि "इन बातों के पश्चात यहोवा का यह वचन दर्शन में अब्राम के पास पहुंचा, कि हे अब्राम, मत डर; तेरी ढाल और तेरा अत्यन्त बड़ा फल मैं हूं" (15:1)। परमेश्वर कुलपति को आश्वस्त कर रहा था कि जीवन के सभी खतरों और संघर्षों में वह लगातार उसके साथ बना रहेगा, उस की सुरक्षा और उसे आशीष देने के लिए। इसी प्रकार की प्रतिज्ञाएं इसहाक (26:3) और याकूब (28:13-15) के जीवनों में भी पूरी हुईं, और अब हम मिस्र में यूसुफ़ के संघर्षों में भी दृढ़ता से उनके दोहराए जाने को देखते हैं। बहुत बाद में, मूसा ने कहा कि परमेश्वर इस्राएल के साथ रहकर, उनकी चालीस वर्ष की जंगल की यात्रा में उनकी आवश्यकताओं को पूरा करता रहा (व्यव. 2:7)। फिर मूसा की मृत्यु के बाद, यहोशू को कनान पर दृढ़ता से चढ़ाई करने के लिए, परमेश्वर ने अपने आप को प्रकट किया और कहा कि, "तेरे संग भी रहूंगा; और न तो मैं तुझे धोखा दूंगा, और न तुझ को छोड़ूंगा" (यहोशू 1:5)।

यही प्रसंग अपने चरम में यीशु मसीह में होकर प्रकट हुआ। यीशु के जन्म के समय, उसको "इम्मानुएल," अर्थात "परमेश्वर हमारे साथ" कहा गया (मत्ती 1:23)। अपनी व्यक्तिगत सेवकाई में, उन्होंने अपने चेलों के बीच में परमेश्वर की सामर्थ्य और उपस्थिति को दिखाया। उन्होंने रोगियों को चंगा किया, पिसे हुओं को आशीष दी, और दुष्टात्माओं को निकाला (मत्ती 12:28; मरकुस 2:1-12; लूका 4:14-21); और उन्हें भी सामर्थ्य दी कि वे भी ऐसा ही करें (मत्ती 10:1-8)। यीशु जानते थे कि उसके चेले भी उन्हीं प्रलोभनों, सताव, बन्दी बनाए जाने और दुर्व्यवहार से हो कर निकलेंगे जिसे यूसुफ़ और विश्वास के अन्य नायकों को अपने विश्वास की साक्षी के लिए सहना पड़ा था। उसने उन्हें चेतावनी दी कि वे कठिनाइयों का सामना करेंगे (मत्ती 23:29-36; देखें इब्रानियों 11:35-40). फिर भी, यीशु ने कहा कि उसके नाम की खातिर उनके साथ किए गए सभी अन्यायों के बावजूद, उनके पास अपने विश्वास की गवाही देने के अवसर होंगे।उसने उनकी उन अंधेरी घड़ियों में भी उनके साथ रहने का वायदा किया (लूका 21:12-15)।

बाद के इस कथन ने यीशु के पुनरुत्थान के पश्चात अपने चेलों से की गई महान प्रतिज्ञा के मार्ग को तैयार किया। उन्होंने न केवल उन्हें आश्वस्त किया कि वे उनके साथ रहेंगे, वरन उन्होंने इस बात को युग के अन्त तक बढ़ा दिया (मत्ती 28:18-20)। इब्रानियों का लेखक कहता है कि यीशु की यह प्रतिज्ञा: "मैं तुझे

कभी न छोड़ूंगा, और न कभी तुझे त्यागूंगा" (इब्रा. 13:5) हमारे साथ आज भी बनी हुई है। प्रभु की अन्तःकरण में निवास करने वाली उपस्थिति उनके हृदयों में होती है जो विश्वास, पश्चाताप और बपतिस्मा के साथ उसे प्रतिक्रिया देते हैं। ऐसे आज्ञाकारी विश्वास का परिणाम न केवल पापों से क्षमा है, वरन साथ ही पवित्र आत्मा को प्राप्त करना भी है (प्रेरितों 2:38; देखें यूहन्ना 7:37-39; 14:16-18, 23; रोमियों 8:9-11)।

इस जानकारी से कि पुराने नियम के समय में परमेश्वर यूसुफ़ और उसके परिवार के साथ उपस्थित था हम धन्य हैं, लेकिन इससे भी बड़ी आशीष यह है कि यीशु "परमेश्वर हमारे साथ" (मत्ती 1:23) है। वह पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे अन्दर वास करता है। हम परमेश्वर की महिमा के उस धन को अनुभव करना अभी से ही आरंभ कर सकते हैं, जिसकी पहचान पौलुस ने "मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है" (कुलु. 1:27) कहकर की।

समाप्ति नोट्स

[1]गैरी प्रैटिको, "पोतीफर," *द इन्टरनैशनल स्टैन्डर्ड बाइबल एन्साईक्लोपीडिया* में, रिव. एड., एड. ज्यौफ्री डबल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैलिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैन्स पबलिशिंग कम्पनी, 1986), 3:913. [2]आर. डी. पैट्रसन, "סָרִיס," *TWOT* में, 2:634-35. [3]फ्रांसिस ब्राउन, एस. आर. ड्राईवर, एन्ड चार्ल्स ए. ब्रिग्स, *ए हीब्रू एण्ड इंगलिश लेक्सिकॉन ऑफ द ओल्ड टेस्टामेंट* (ऑक्सवर्ड: क्लैरेन्डौन प्रेस, 1962), 371. [4]ऐसे ही वर्णन 21:20; 26:28; यहोशू 6:27; न्यायियों 1:22; 1 शमूएल 3:19; 18:12 में भी पाए जाते हैं। [5]अब्राहम और उसके वंशज "इब्री" कहलाए, जो "एबेर" नाम से आया है (देखें 10:21; 14:13; 39:14, 17; 40:15; 41:12; 43:32)। [6]जॉन टी. विलिस, *जेनिसिस*, द लिविन्ग वर्ड कॉमेन्ट्री (ऑस्टिन, टेक्स.: स्वीट पबलिशिंग कम्पनी, 1979), 400. [7]व्यभिचार सबसे पहले और सबसे बढ़कर परमेश्वर के विरुद्ध पाप है, वह सृष्टिकर्ता जिसने मानवीय यौन अभिव्यक्ति की सीमाएं निर्धारित की हैं (भजन 51:4)। [8]एक बार फिर यूसुफ़ का वस्त्र धोखे में प्रमाण बनाकर प्रयोग किया गया (देखें 37:31-33)। [9]बाद में, व्यवस्था में, यदि कोई पुरुष किसी कुंवारी कन्या के साथ जिस की ब्याह की बात लगी हो कुकर्म का प्रयास करे और वह चिल्लाए, तो उसे व्यभिचारिणी होने के दोष में दण्ड नहीं दिया जाता (व्यव. 22:23-27)।